३. वर्गणाखंड–विचार

षट्खंडागमके छह खंडोंका परिचय प्रथम जिल्दकी भूमिकामें कराया जा चुका है। वहां यह बतलाया गया है कि उन छह खंडोंमें से प्रथम पाच अर्थात् जीवट्ठाण, खुद्दाबंध, बंधसामित्तविजय, वेदणा और वग्गणा उपलब्ध धवलाकी प्रतियोंमें निबद्ध हैं तथा शेष छठवां अर्थात् महाबंध स्वतंत्र पुस्तकारूढ़ है, जिसकी प्रतिलिपि अभीतक मूडबिद्री मठके बाहर उपलब्ध

नहीं है। इनमेंसे चार खंडोंके सम्बन्धमें तो कोई मतभेद नहीं है, किन्तु वेदना और वर्गणा खंडकी सीमाओंके सम्बन्धमें एक शंका उत्पन्न की गई है जो यह है कि "धवलग्रन्थ वेदना खंडके साथ ही समाप्त हो जाता है– वर्गणाखंड उसके साथमें लगा हुआ नहीं है"। इस मतकी पुष्टिमें जो युक्तियां दी गई हैं वे संक्षेपतः निम्न प्रकार हैं—

१. जिस कम्मपयडिपाहुडके चौवीस अधिकारोंका पुष्पदन्त–भूतबलिने उद्धार किया है उसका दूसरा नाम 'वेयणकसिणपाहुड' भी है जिससे उन २४ अधिकारोंका 'वेदनाखंड' के ही अन्तर्गत होना सिद्ध होता है।

२. चौवीस अनुयोगद्वारोंमें वर्गणा नामका कोई अनुयोगद्वार भी नहीं है। एक अवान्तर अनुयोगद्वारके भी अवान्तर भेदान्तर्गत संक्षिप्त वर्गणा प्ररूपणाको 'वर्गणाखंड' कैसे कहा जा सकता है?

३. वेदनाखंडके आदिके मंगलसूत्रोंकी टीकामें वीरसेनाचार्यने उन सूत्रोंको ऊपर कहे हुए वेदना, बंधसामित्तविचय और खुद्दाबंधका मंगलाचरण बतलाया है और यह स्पष्ट सूचना की है कि वर्गणाखंडके आदिमें तथा महाबंधखंडके आदिमें पृथक् मंगलाचरण किया गया है। उपलब्ध धवलाके शेष भागमें सूत्रकारकृत कोई दूसरा मंगलाचरण नहीं देखा जाता, इससे वह वर्गणाखंडकी कल्पना गलत है।

४. धवलामें जो 'वेयणाखंड समत्ता' पद पाया जाता है वह अशुद्ध है। उसमें पड़ा हुआ 'खंद' असंगत है जिसके प्रक्षिप्त होनेमें कोई सन्देह मालूम नहीं होता।

५. इन्द्रनन्दि और विबुधश्रीधर जैसे ग्रन्थकारोंने ज़ो कुछ लिखा है वह प्रायः किंवदन्तियें अथवा सुने-सुनाये आधारपर लिखा जान पड़ता है। उनके सामने मूल ग्रन्थ नहीं थे, अतएव उनकी साक्षीको कोई महत्व नहीं दिया जा सकता।

६. यदि वर्गणाखंड धवलाके अन्तर्गत था तो यह भी हो सकता है कि लिपिकारने शीघ्रतावश उसकी कापी न की हो और अधूरी प्रतिपर पुरस्कार न मिल सकने की आशंकासे उसने ग्रन्थकी अन्तिम प्रशस्तिको जोड़कर ग्रन्थको पूरा प्रकट कर दिया हो[1]।

अब हम इन युक्तियोंपर क्रमशः विचार कर ठीक निष्कर्षपर पहुंचनेका प्रयत्न करेंगे।

१ वेयणकसिणपाहुड और वेदनाखंड एक नहीं हैं।

यह बात सत्य है कि कम्मपयडिपाहुडका दूसरा नाम वेयणकसिणपाहुड भी है और यह गुण नाम भी है, क्योंकि, वेदना कर्मोंके उदयको कहते हैं और उसका निरवशेषरूपसे जो वर्णन

---

१ जैनसिद्धान्त भास्कर ६, १ पृ. ४२; अनेकान्त ३, १ पृ. ३.

करता है उसका नाम वेयणकसिणपाहुड (वेदनकृत्स्नप्राभृत) है। किन्तु इससे यह आवश्यक नहीं हो जाता कि समस्त वेयणकसिणपाहुड वेदनाखंडके ही अन्तर्गत होना चाहिये, क्योंकि यदि ऐसा माना जावे तब तो छह खंडोंकी अवश्यकता ही नहीं रहेगी और समस्त षट्खंड वेदनाखंड के ही अन्तर्गत मानना पडेंगे चूंकी जीवट्ठाण आदि सभी खंडोंमें इसी वेयणकसिणपाहुडके अंशों का ही तो संग्रह किया गया हैं जैसा कि प्रथम जिल्दकी भूमिकामें दिये गये मानचित्रों तथा संतपरूवणा पृ. ७४ आदिके उल्लेखोंसे स्पष्ट है। यह खंड–कल्पना कम्मपयडिपाहुड या वेयणकसिणपाहुडके अवान्तर भेदोंकी अपेक्षासे की गई है, किसी एक खंडको समूचे पाहुडका अधिकारी नही बनाया गया। स्वयं धवलाकारने वेदनाखंडको महाकम्मपयडिपाहुड समझ लेनेके विरुद्ध पाठकोंको सतर्क कर दिया है। वेदनाखंडके आदिमें मंगलके निबद्ध अनिबद्धका विवेक करते समय वे कहते हैं–

‘ण च वेयणाखंडं महाकम्मपयडिपाहुडं, अवयवस्स अवयवित्तविरोहादो’

अर्थात् वेदनाखंड महाकर्मप्रकृतिप्राभृत नहीं है, क्योंकि अवयवको अवयवी मान लेनेमें विरोध उत्पन्न होता है। यदि महाकर्मप्रकृतिप्राभृतके चौवीसों अनुयोगद्वार वेदनाखंडके अन्तर्गत होते तो धवलाकार उन सबके संग्रहको उसका एक अवयव क्यों मानते ? इससे बिलकुल स्पष्ट है कि वेदनाखंडके अन्तर्गत उक्त चौवीसों अनुयोगद्वार नहीं हैं।

२. क्या वर्गणा नामका कोई पृथक् अनुयोगद्वार न होनेसे उसके नामपर खंड संज्ञा नही हो सकती ?

कम्मपयडिपाहुडके चौवीस अनुयोगद्वारोंमें वर्गणा नामका कोई अनुयोगद्वार नहीं है, यह बिलकुल सत्य है, किन्तु किसी उपभेदके नामसे **वर्गणाखंड** नाम पडना कोई असाधारण घटना तो नही कही जा सकती। यथार्थतः अन्य खंडोंमें एक वेदनाखंडको छोडकर अन्य शेष सब खंडोंके नाम या तो विषयानुसार कल्पित हैं, जैसे जीवट्ठाण, खुद्दाबंध और महाबंध। या किसी अनुयोगद्वारके, उपभेदके नामानुसार हैं, जैसे बंधसामित्तविचय। उसी प्रकार यदि वर्गणा नामक उपविभाग पदसे उसके महत्त्वके कारण एक विभागका नाम वर्गणाखंड रखा गया हो तो इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। चौवीस अधिकारोंमेंसे जिस अधिकार या उपभेदका प्रधानत्व पाया गया उसीके नामसे तो खंड संज्ञा की गई है, जैसा कि धवलाकारने स्वयं प्रश्न उठाकर कहा है कि कृति, स्पर्श, कर्म और प्रकृतिका भी यहां प्ररूपण होनेपर भी उनकी खंडग्रंथ संज्ञा न करके केवल तीन ही खंड कहे जाते हैं, क्योंकि शेषमें कोई प्रधानता नहीं है और यह उनके संक्षेप प्ररूपणसे जाना जाता है[1]। इसी संक्षेप प्ररूपणका प्रमाण देकर वर्गणा को भी खंड संज्ञासे च्युत करनेका प्रयत्न किया जाता है। पर संक्षेप और विस्तार आपेक्षिक शब्द हैं, अतएव वर्गणाका प्ररूपण धवलामें संक्षेपसे किया गया है या विस्तारसे यह उसके विस्तारका अन्य अधिकारोंके विस्तारसे मिलान द्वारा ही जाना जा सकता है। अतएव

---

१ देखो संतपरूपणा, जिल्द ?, भूमिका पृ. ६५ टिप्पणी.

उक्त अधिकारोंके प्ररूपण-विस्तार को देखिये। बंधसामित्तविचयखंड अमरावती प्रतिके पत्र ६६७ पर समाप्त हुआ है। उसके पश्चात् मंगलाचरण व श्रुतावतार आदि विवरण ७१३ पत्र तक चलकर कृतिका प्रारंभ होता है जिसका ७५६ तक ४३ पत्रोंमें, वेदनाका ७५६ से ११०६ तक ३५० पत्रोंमें, स्पर्शका ११०६ से १११४ तक ८ पत्रोंमें, कर्मका १११४ से ११५९ तक ४५ पत्रोंमें प्रकृतिका ११५९ से १२०९ तक ५० पत्रोंमें और बंधन के बंध और बंधनीयका १२०९ से१३३२ तक १२३ पत्रोंमें, प्ररूपण पाया जाता है। इन १२३ पत्रोंमेंसे बंधका प्ररूपण प्रथम १० पत्रोंमें ही समाप्त कर दिया गया है, यह कहकर कि–

'एत्थ उद्देसे खुद्दाबंधस्स एक्कारस-अणियोगद्दाराणं परूवणा कायव्वा'।

इसके आगे कहा गया है कि–

'तेण बंधणिज्ज परूवणे कीरमाणे वग्गण-परूवणा णिच्छएण कायव्वा, अण्णहा तेवीस-वग्गणासु इमा चेव वग्गणा बंधपाओग्गा अण्णाओ बंधपाओग्गाओ ण होंति त्ति अवगमाणुव-वत्तीदो। वग्गणाणमणुमग्गणट्ठदाए तत्थ इमाणि अट्ठ अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति' इत्यादि।

अर्थात् बंधनीयके प्ररूपण करनेमें वर्गणा की प्ररूपणा निश्चयत: करना चाहिये, अन्यथा तेईस वर्गणाओंमें ये ही वर्गणाएं बंधके योग्य हैं अन्य वर्गणाएं बंधके योग्य नहीं हैं, ऐसा ज्ञान नहीं हो सकता। उन वर्गणाओंकी मार्गणाके लिये ये आठ अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं। इत्यादि।

इस प्रकार पत्र १२१९ से वर्गणाका प्ररूपण प्रारंभ होकर पत्र १३३२ पर समाप्त होता है, जहां कहा गया है कि–

'एवं विस्ससोवचयपरूवणाए समत्ताए बाहिरियवग्गणा समत्ता होदि'।

इस प्रकार वर्गणाका विस्तार ११३ पत्रोंमें पाया जाता है, जो उपर्युक्त पांच अधिकारोंमेंसे वेदनाको छोडकर शेष सबसे कोई दुगुना व उससे भी अधिक पाया जाता है। पूरा खुद्दाबंधखंड ४७५ से ५७६ तक १०१ पत्रोंमें तथा बंधसामित्तविचयखंड ५७६ से ६६७ तक ९१ पत्रोंमें पाया जाता है। किन्तु एक अनुयोगद्वारके अवान्तरके भी अवान्तर भेद वर्गणाका विस्तार इन दोनों खंडोंसे अधिक है। ऐसी अवस्थामें उसका प्ररूपण संक्षिप्त कहना चाहिये या विस्तृत और उससे उसे खंड संज्ञा प्राप्त करने योग्य प्रधानत्व प्राप्त हो सका या नहीं, यह पाठक विचार करें।

३. वेदनाखंडके आदिका मंगलाचरण और कौन कौन खंडोंका है ?

वेदनाखंडके आदिमें मंगलसूत्र पाये जाते हैं। उनकी टीकामें धवलाकारने खंडविभाग और उनमें मंगलाचरणकी व्यवस्था संबंधी जो सूचना दी है उसको निम्न प्रकार उद्धृत किया जाता है–

'उवरि उच्चमाणेसु तिसु खंडेसु कस्सेदं मंगलं ? तिण्णं खंडाणं। कुदो ? वग्गणा-महाबंधाणमादीए मंगलकरणादो। ण च मंगलेण विणा भूदबलिभडारओ गंथस्स पारभदि, तस्स अणाइरियत्तपसंगादो×× कदि–पास–कम्म–पयडि–अणियोगद्दाराणि वि एत्थ परूविदाणि, तेसिं खंडगंथसण्णमकाऊण तिण्णि चेव खंडाणि त्ति किमट्ठं उच्चदे ? ण, तेसिं पहाणत्ताभावादो। तं पि कुदो णव्वदे ? संखेवेण परूवणादो'।

वर्गणाखंडको धवलान्तर्गत स्वीकार न करनेवाले विद्वान् इस अवतरणको देकर उसका यह अभिप्राय निकालते हैं कि– "वीरसेनाचार्यने उक्त मंगलसूत्रोंको ऊपर कहे हुए तीनों खंडों वेदना, बंधसामित्तविचओ और खुद्दाबंधो– का मंगलाचरण बतलाते हुए यह स्पष्ट सूचना की है कि वर्गणाखंडके आदिमें तथा महाबंधखंडके आदिमें पृथक् मंगलाचरण किया गया है, मंगलाचरणके बिना भूतबलि आचार्य ग्रंथका प्रारंभ ही नही करते हैं। साथ ही यह भी बतलाया है कि जिन कदि, फास, कम्म, पयडि (बंधण) अणुयोगद्वारोंका भी यहां (एत्थ)– इस वेदनाखंडमें प्ररूपण किया गया है उन्हें खंडग्रंथ संज्ञा न देनेका कारण उनके प्रधानताका अभाव है, जो कि उनके संक्षेप कथनसे जाना जाता है। उक्त फास आदि अनुयोगद्वारोंमेंसे किसीके भी शुरूमें मंगलाचरण नहीं है और इन अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा वेदनाखंडमें की गई है, तथा इनमेंसे किसीको खंडग्रंथकी संज्ञा नहीं दी गई यह बात ऊपरके शंका समाधानसे स्पष्ट है।"

अब इस कथनपर विचार कीजिये। 'उवरि उच्चमाणेसु तिसु खंडेसु' का अर्थ किया गया है 'ऊपर कहे हुए तीन खंड, अर्थात् वेदना, बंधसामित्त और खुद्दाबंध'। हमें यहांपर यह याद रखना चाहिये कि खुद्दाबंध और बंधसामित्त खंड दूसरे और तीसरे हैं जिनका प्ररूपण हो चुका है और अभी वेदनाखंडके केवल मंगलाचरणका ही विषय चल रहा है, खंडका विषय आगे कहा जायगा। 'उवरि उच्चमाण' की संस्कृत छाया, जहांतक मैं समझता हूं 'उपरि उच्यमान' ही हो सकती है, जिसका अर्थ 'ऊपर कहे हुए' कदापि नहीं हो सकता। 'उच्यमान' का तात्पर्य केवल प्रस्तुत या आगे कहे जानेवालेसेही हो सकता है। फिर भी यदि 'ऊपर कहे हुए' ही मानलें तो उससे ऊपरके दो और आगेके एक का समुच्चय कैसे हो सकता है ? ऊपर कहे हुए तीन खंड तो जीवट्ठाण आदि तीन हैं, बाकी तीन आगे कहे जानेवाले हैं। इस प्रकार उपर्युक्त वाक्यका जो अर्थ लगाया गया है वह बिलकुल ही असंगत है।

अब आगेका शंका-समाधान देखिये। प्रश्न है यह कैसे जाना कि यह मंगल 'उवरि उच्चमाण' तीनों खंडोंका है ? इसका उत्तर दिया जाता है 'क्योंकि वर्गणा और महाबंध के आदिमें मंगल किया गया है'। यदि यहां जिन खंडोंमें मंगल किया गया है उनको अलग निर्दिष्ट कर देना आचार्यका अभिप्राय था तो उनमें जीवट्ठाणका भी नाम क्यों नही लिया, क्योंकि तभी तो तीन खंड शेष रहते, केवल वर्गणा और महाबंधको अलग कर देनेसे तो चार खंड शेष रह गये। फिर आगे कहा गया है कि मंगल किये विना भूतबलि भट्टारक ग्रंथ प्रारंभ ही नही करते, क्योंकि उससे अनाचार्यत्वका प्रसंग आ जाता है। पर उक्त व्यवस्थाके अनुसार तो यहां एक नहीं, दो दो खंड मंगलके विना, केवल प्रारंभ ही नहीं, समाप्त भी किये जा चुके

जिनके मंगलाचरणका प्रबंध अब किया जा रहा है, जहां स्वयं टीकाकार कह रहे हैं कि मंगलाचरण आदिम ही किया जाता है, नहीं तो अनाचार्यत्वका दोष आ जाता है। इससे तो धवलाकारका मत स्पष्ट है कि प्रस्तुत ग्रंथरचनामें आदि मंगलका अनिवार्य रूपसे पालन किया गया है। हमने आदिमंगलके अतिरिक्त मध्यमंगल और अन्तमंगलका भी विधान पढा है। किन्तु इन प्रकारोंमेंसे किसी भी प्रकार द्वारा वेदनाखंडके आदिका मंगल, खुद्दाबंधका भी मंगल सिद्ध नहीं किया जा सकता। इस प्रकार यह शंका समाधान विषयको समझानेकी अपेक्षा अधिक उलझनमें ही डालने वाला है।

आगेके शंका समाधानकी और भी दुर्दशा की गई है। प्रश्न है कृति, स्पर्श, कर्म और प्रकृति अनुयोगद्वार भी यहां प्ररूपित हैं, उनकी खंडसंज्ञा न करके केवल तीन ही खंड क्यों कहे जाते हैं? यहां स्वभावतः यह प्रश्न उपस्थित होता है कि यहां कौनसे तीन खंडोंका अभिप्राय है? यदि यहां भी उन्हीं खुद्दाबंध, बंधसामित्त और वेदनाका अभिप्राय है तो यह बतलानेकी आवश्यकता है कि प्रस्तुतमें उनकी क्या अपेक्षा है। यदि चौवीस अनुयोगद्वारोंमेंसे उत्पत्तिकी यहां अपेक्षा है तो जीवस्थान, वर्गणा और महाबंध भी तो वहींसे उत्पन्न हुए हैं, फिर उन्हें किस विचारसे अलग किया गया? और यदि वेदना, वर्गणा और महाबंधसे ही यहां अभिप्राय है तो एक तो उक्त क्रममें भंग पडता है और दूसरे वर्गणाखंडके भी इन्हीं अनुयोगद्वारोंमें अन्तर्भावका प्रसंग आता है। जिन अनुयोगद्वारोंकी ओरसे खंड संज्ञा प्राप्त न होनेकी शिकायत उठायी गई है उनमें वेदनाका नाम नहीं है। इससे जाना जाता है कि इसी वेदना अनुयोगद्वार परसे वेदनाखंड संज्ञा प्राप्त हुई है। पर यदि 'एत्थ' का तात्पर्य "इस वेदनाखंडमें" ऐसा लिया जाता है तब तो यह भी मानना पडेगा कि वे तीनों खंड जिनका उल्लेख किया गया है, वेदनाखंडके अन्तर्गत हैं। पयडिके आगे बन्धन और क्यों अपनी तरफसे जोडा गया जब कि वह मूलमें नहीं है, यह भी कुछ समझमें नहीं आता। इस प्रकार यह प्रश्न भी बडी गडबडी उत्पन्न करनेवाला सिद्ध होता है।

अतः वेदनाखंडके आदिमें आये हुए मंगलाचरणको खुद्दाबंध और बंधसामित्तका भी सिद्ध करना तथा कृति आदि चौवीसों अनुयोगद्वारोंको वेदनाखंडान्तर्गत बतलाना बडा बेतुका, बे आधार और सारे प्रसंगको गडबडीमें डालनेवाला है। यह सब कल्पना किन भूलोंका परिणाम है और उक्त अवतरणोंका सच्चा रहस्य क्या है यह आगे चलकर बतलाया जायगा! उससे पूर्व शेष तीन युक्तियोंपर और विचार कर लेना ठीक होगा।